प्रयोजनमूलक हिन्दी

प्रयोजन शब्द से तात्पर्य है – उद्देश्य जिस भाषा का प्रयोग किया विशेष प्रयोजन की सिद्धि के लिए किया जाए, उस प्रयोजनमूलक भाषा कहा जाता है। हिन्दी में यह शब्द **Functional Langusge** के पर्याय के रूप में प्रयुक्त किया जा रहा है, जिसका तात्पर्य है – जीवन के विविध विशिष्ट आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उपयोग में लाई जाने वाली भाषा। इस रूप में इसका क्षेत्र संकुचित और सीमित हो जाता है। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो प्रयोजनमूलक भाषा से तात्पर्य है कि सी प्रयोजन विशेष की लिए इस्तेमाल होनेवाली भाषा। यों तो भाषा का उद्देश्य सदैव ही भावों और विचारों की अभिव्यक्ति होता है चाहे वह अभिव्यक्ति मौखिक है अथवा लिखित। इस सहज प्रयोजन के अतिरिक्त भाषा कुछ निश्चित प्रयोजनों का माध्यम भी बनती है और ऐसे प्रयोजन विशेष के लिए इस्तेमाल की जानेवाली भाषा प्रयोजनमूलक भाषा कहलाती है। प्रयोजनमूलक भाषा में औपचारिकता अधिक होती है तथा भाव प्रधान शैली का अभाव होता है। साथ ही सामान्य बोलचाल की भाषा की तुलना में प्रयोजनमूलक भाषा का विस्तार कम होता है तथा यह कम शब्दों में स्पष्ट कथन को अभिव्यक्त करता है।

वैज्ञानिक प्रगति के साथ आज हिंदी के विविध रूप सामने आ रहे हैं, जिनका संबंध सेवा माध्यमों से है तथा जो प्रशासन व्यवस्था एवं तकनीकी क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। दूसरे शब्दों में, जीवनकी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उपयोग में लाई जानेवाली हिन्दी ही प्रयोजनमूलक हिंदी है। जो व्यक्तिपरक होकर भी समाज सापेक्ष होती है और जिसका संबंध मूलतः हमारी जीविका के साथ रहता है और उसके निमित्त जो सेवा माध्यम के प्रयुक्त होता है। अतः प्रयोजनमूलक हिन्दी का तात्पर्य हिन्दी के उन विविध रूपों से है जो सेवा माध्यम के रूप में सामने आता है। विद्वानों ने प्रयोजनमूलक हिंदी का स्वरूप निर्धारित करते हुए उसके विभिन्न रूपों की चर्चा की है तथा विभिन्न भाषा प्रयुक्तियों की ओर संकेत किया है जो प्रमुख निम्नलिखित है :–

1. वाणिज्य व्यापार की हिंदी जिसमें मुख्यतः मंडियों की भाषा, सराफ के दलालों की भाषा, सट्टेबाजार की भाषा आदि है।
2. कार्यालयी हिंदी जिसमें विभिन्न कार्यालयों तथा प्रशासन से संबंधित भाषा रूप आते हैं।
3. ज्ञान कि विभिन्न क्षेत्रों में प्रयुक्त हिंदी जिसमें विभिन्न शास्त्रों में प्रयुक्त भाषारूप समाहित किए जा सकते हैं जैसे संगीतशास्त्र, काव्यशास्त्र, दर्शनशास्त्र, भाषाशास्त्र, योगशास्त्र, ज्योतिषशास्त्र, इतिहास, राजनीति विज्ञान, समाजशास्त्र आदि आते हैं।
4. तकनीकी हिंदी इसमें इंजीनियरिंग, बढ़ई गिरी, लुहार का कार्य तथा प्रेस, फैक्टरी मिल आदि की तकनीकी भाषा का समावेश होता है।
5. साहित्यिक हिंदी, जो कविता, नाटक, निबंध आदि की भाषा है। विषय क्षेत्र से संबंधित होने के कारण इस प्रकार के भाषा रूप को विशिष्ट प्रयोजन की भाषा भी कहा जाता है।

हिन्दी के संदर्भ में प्रयोजनमूलक विशेषण का प्रयोग अपेक्षाकृत नया है। इसका तेजी से विकास आधुनिक युग में आकर हुआ है। 19वीं शताब्दी में पश्चिमी ज्ञान–विज्ञान और प्रौद्योगिकी से संपर्क, आधुनिक शिक्षा की शुरुआत कंपनी शिक्षा के माध्यम के रूप में उसके प्रयोग, भारतीय भाषाओं में पत्रकारिता के विकास और स्वतंत्रता प्राप्ति के

Scanned with CamScanner

पश्चात संघ की राजभाषा के रूप में उसकी स्वीकृति, देश में औद्योगिक विकास आदि कारणों से हिन्दी भाषा को नए दायित्वों से गुजरना पड़ा और उनके प्रयोजनमूलक हिंदी के विविध रूप इस प्रकार है :–

1.कार्यालय में हिन्दी :– कार्यालय हिन्दी से तात्पर्य प्रशासनिक क्षेत्र में प्रयुक्त हिंदी से है। इसे कार्यालय हिंदी इसलिए कहा जाता है कि यह सरकारी तथा सार्वजनिक क्षेत्र के कार्यालयों के कामकाज से संबंध रखती है। कार्यालयों में हिन्दी के प्रयोग को स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद बढ़ावा दिया गया क्योंकि उस समय यह महसूस किया गया कि स्वाधीन देश की राजभाषा अंग्रेजी न हो हिंदी होनी चाहिए। सरकारी कार्यालयों में कामकाज की जो पद्धति अपनाई गई उसका स्वरूप अंग्रेजी शासन व्यवस्था के समान ही रहा। परिणाम यह हुआ कि कार्यालय में हिंदी का प्रयोग करने के लिए अनुवाद की व्यापक सहायता ली गई। इस प्रकार कार्यालय हिंदी के विकास में अनुवाद की एक महत्वपूर्ण भूमिका रही।

कार्यालय हिंदी की प्रमुख विशेषता इनकी कर्मवाच्य वाक्य संरचना है। सरकारी व्यवस्था में निर्णय सरकारी तंत्र द्वारा किया जाता है, किसी व्यक्ति द्वारा नहीं। इसलिए कार्यालयी हिंदी में प्रयुक्त वाक्य संरचना कर्मवाच्य में होती है। इसमें व्यक्ति अनुक्त रहता है। कार्यालय हिंदी का स्वरूप तकनीकी, लिखित और औपचारिक होता है। इसमें कार्यालयी संदर्भ की तकनीकी शब्दावली का प्रयोग होता है और इसका व्यवहार औपचारिक प्रयोजनों से लिखित रूप में होता है। कार्यालय हिन्दी शब्दावली के कुछ उदाहरण है – कचहरी, अनुमान, अदालत, हलफनामा, प्रस्ताव, आवेदन–पत्र, दफ्तर आदि। कार्यालयी हिंदी की भाषा सूचना प्रधान होती है यानी इसके द्वारा कर्मचारियों और अधिकारियों तथा विभागों के बीच सूचनाओं का आदान–प्रदान होता है। कार्यालयी हिन्दी में अभिधा का प्रयोग होता है। यानी कार्यालयी भाषा में एकार्थता का होना आवश्यकता है ताकि विचारों के आदान–प्रदान में किसी प्रकार के संदेह की गुंजाइश न हो।

2.वाणिज्य व्यापार के क्षेत्र में हिंदी :– व्यापार और वाणिज्य का क्षेत्र जीवन की बहुत ही महत्वपूर्ण क्षेत्र होता है। वाणिज्य और व्यापार के क्षेत्र में हिंदी की उपयोगिता दिन–प्रतिदिन बढ़ती चली जा रही है। इसका कारण यह है कि इस क्षेत्र का संबंध समाज के सभी वर्गों से है। इससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण पक्ष इसका विस्तारपरक आयाम है जो किसी एक क्षेत्र तक ही सीमित नहीं रहता इसका स्वरूप अंतर्देशीय तो होता है ही है, अंतर्राष्ट्रीय भी हो सकता है।

3.बैंकिंग के क्षेत्र में हिंदी :– आम आदमी के जीवन में बैंक एक अनिवार्य अंग है। अपना बचत खाता रखने के अलावा विभिन्न प्रकार की अदायगी रखने, कर्ज लेने आदि के लिए भी बैंक से संपर्क करना पड़ता है। इसलिए बैंक के कामों में हिंदी का व्यापक प्रचलन है। उनके नाम और अन्य कागजात अक्सर ही भाषिक होते है। बचत खाता, जमापर्ची, आवेदनपत्र, चेक, बैंक ड्राफ्ट आदि के कामों में हिन्दी का प्रयोग होता है। बैंकिंग हिंदी में प्रयुक्त होनेवाली हिंदी की वाक्य संरचनाओं की कुछ विशेषता निम्नलिखित है :–

1.कर्ता का लोप
2.व्यक्ति निरपेक्षता / अप्रत्यक्षता
3.बैंकिंग संदर्भ की विशिष्ट शब्दावली का प्रयोग
उदाहरणस्वरूप :–

- यहां लॉकर सुविधा उपलब्ध है।
- पैसे का भुगतान कर दिया गया है।

Scanned with CamScanner

- यहाँ हस्ताक्षर कीजिए।

चेक, निवेश, खातेदार, सावधि जमा खाता, बैंक दर, साख, लेन–देन, निकासी, तार संदेश, ड्राफ्ट, पास बुक आदि बैंकिंग के क्षेत्र में प्रयुक्त होनेवाली शब्दावली है।

4.विधि के क्षेत्र में हिन्दी :– स्वतंत्रता के बाद जब हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया तो इसे विधि एवं न्याय व्यवस्था में भी अपनाने पर विचार किया गया। इसके लिए हिंदी में विधि शब्दावली का निर्माण किया गया। शब्द निर्माण का आधार अंग्रेजी का आधार रहा तथा उनके हिंदी पर्याय संस्कृत तथा अरबी फारसी से ग्रहण किए गए। आज सरकारी कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग पर्याप्त मात्रा में हो रहा है परन्तु न्यायालयों में हिंदीकरण की आवश्यकता आज भी महसूस की जा रही है। राजभाषा आयोग ने विधि के क्षेत्र में हिंदी को स्थापित करने के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

5.सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में हिंदी :– सामाजिक विज्ञान का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। इस क्षेत्र के अंतर्गत राजनीतिक विज्ञान, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र और इतिहास आदि विषय आते हैं। इनकी शब्दावली संकल्पनाओं और विचारधाराओं पर आधारित होती है और अपने भीतर विशिष्ट अर्थ समाहित किए होती है। राष्ट्रवाद, राष्ट्रवादी, साम्राज्यवादी, पूँजीवादी, मार्क्सवादी, वर्ग–शोषण, आदि शब्दों का प्रयोग सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में होती है। ये सभी पारिभाषिक शब्द है। इनका प्रयोग विशिष्ट अर्थों में होता है और जरूरी नहीं कि वह विशिष्ट अर्थ अपने मूल शब्द अर्थ से तादात्म्यक संगति ही रखे। इस शब्दावलीगत वैशिष्ट्य के अतिरिक्त सामाजिक विज्ञानों की भाषा में वाक्य संरचनागत स्वरूप सामान्य भाषा सा ही होता है।

6.जनसंचार के क्षेत्र में हिंदी :– जनसंचार माध्यमों में विशेष रूप से अखबार, रेडियो एवं दूरदर्शन ने पर्याप्त योगदान दिया है। वैज्ञानिक प्रगति के साथ–साथ जनसंचार के क्षेत्र में भी एक क्रांति आई है। इस क्षेत्र में व्यापकता का समावेश हुआ है। मुद्रित सामग्री के रूप में उपलब्ध समाचारपत्र, पत्रिकाएँ तथा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, दोनों का उद्देश्य समाज के सभी वर्गों के साथ संप्रेषण होता है। समाचार पढ़े जा रहे हैं या छापे जा रहे हैं तो वे वर्ग विशेष के लिए न होकर समाज के सभी वर्गों के लिए हैं यानी बुद्धिजीवियों, व्यवसायियों आदि से लेकर किसान और श्रमिक वर्ग तक के लिए हैं। ऐसी स्थिति में भाषा ऐसी होनी चाहिए जो सहज, सरल, स्पष्ट और बोधगम्य हो। ध्यान रखने योग्य बात है कि संचार माध्यमों में विषयगत सीमा कोई नहीं होती। तकनीकी और विशिष्ट विषय का कला और साहित्य से लेकर खेल–कूद और बाजार भाव तक की सामग्री उनमें प्रस्तुत की जाती है। ऐसे में विभिन्न विषयों की अपेक्षित शब्दावली भी उनमें अवश्य ही समाविष्ट होती है और इस समावेश के बावजूद भाषा में बोलचाल की सरलता और लय बनाए रखनी पड़ती है। अखबारी भाषा में संक्षिप्तियाँ भी प्रयोग में लाई जाती है, जबकि हिंदी के अन्य प्रयोगों में संक्षिप्तियों का प्रचलन सामान्य नहीं होता। जनसंचार की भाषा सूचना प्रधान होती है। इसकी हिंदी वाक्य संरचना में जनसंचार क्षेत्र की तकनीकी शब्दावली का व्यवहार होता है।

7.विज्ञापन के क्षेत्र में हिंदी :– विज्ञापनों के क्षेत्र का संबंध काफी हद तक संचार माध्यमों से होता है। पत्र–पत्रिकाओं तथा रेडियो और टेलीविजन विज्ञापन के प्रस्तुतिकरण का प्रमुख माध्यम है। विज्ञापन के अन्य माध्यम हैं – दीवारों, बसों, चौराहों आदि पर लगे बोर्ड और पोस्टर तथा सिनेमा पर्दा। इस तरह विज्ञापन के तीन रूप हैं – 1.दृश्य 2. श्रव्य 3. मुद्रित। टेलीविजन और सिनेमा के पर्दे पर तीनों का रूपों का इस्तेमाल होता है, समाचारपत्र, पत्रिकाओं, बोर्डों और पोस्टरों में पहले और तीसरे का तथा रेडियो पर दूसरे का। ये तीनों ही रूप एक दूसरे के पूरक के रूप में काम करते हैं और भाषा

Scanned with CamScanner

अपनी गति और लय के साथ प्रस्तुत होती है, क्योंकि विज्ञापन का उद्देश्य सूचना देने के साथ ही ध्यान आकृष्ट करना भी होता है। विज्ञान के विविध क्षेत्र हैं तथा इन क्षेत्रों में प्रयुक्त हिंदी की विशेषताएँ भिन्न-भिन्न हैं।

8.विज्ञान के क्षेत्र में हिंदी :– विज्ञान के क्षेत्र में हिंदी के जिस रूप का प्रयोग किया जाता है। वह वैज्ञानिक हिंदी स्वरूप के अंतर्गत आती है। वैज्ञानिक और तकनीकी हिंदी का व्यवहार क्षेत्र शिक्षा तथा विज्ञान और प्रौद्योगिकी के प्रयोग अथवा कार्यान्वयन का क्षेत्र है। विज्ञान, उच्च शिक्षा और अनुसंधान में अंग्रेजी के व्यापक प्रयोग के बावजूद हिंदी माध्यम से पढ़ने वाले छात्रों की संख्या बहुत बड़ी है। इसके साथ ही प्रौद्योगिकी को व्यवहार में लानेवालों में बड़ी तादाद में वह वर्ग है भी है जो हिंदी के माध्यम से ही संप्रेषण करता है।

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि प्रयोजनमूलक हिंदी का विस्तार क्षेत्र अत्यंत व्यापक और विस्तृत है। एक ओर कार्यालयों और बैंकों तथा दूसरी ओर जनसंचार, विज्ञापन और तकनीकी क्षेत्रों के विभिन्न प्रयोजनों की सिद्धि में हिंदी सहायक होती है।

Scanned with CamScanner